शोध प्रस्ताव

शोध प्रस्ताव का शीर्षक :–

भारत–नेपाल संबंधः जल प्रबंधन के विशेष संदर्भ में (2014–2024)

Head
University Department of Political Science
Lalit Naray Mithila University, Darbhanga

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर, दरभंगा

सामाजिक विज्ञान संकाय

राजनीति विज्ञान विभाग

पी.ए.टी. सत्र– 2021–2022

पर्यवेक्षक

डॉ. रवीन्द्र कुमार ठाकुर
एसो. प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग
एल.एन.जे. कॉलेज, झंझारपुर

शोधकर्ता

कृष्ण कुमार साह
क्रमांक– 22160085
वर्ग क्रमांक– 11

शोध का शीर्षक :

भारत–नेपाल संबंध : जल प्रबंधन के विशेष संदर्भ में (2014–2024)

शोध समस्या का प्राक्कथन :

नेपाल दक्षिण एशिया में एक छोटा–सा भूमि से घिरा देश है जो पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में भारत और उत्तर में चीन से घिरा हुआ है। नेपाल की सभी नदियाँ, जिनमें तिब्बत से निकलने वाली नदियाँ भी शामिल हैं, बांग्लादेश से होते हुए भारत में आकर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती हैं। नेपाल का पानी इतना महत्वपूर्ण है कि यह गंगा बेसिन के केवल 14.42% क्षेत्र पर कब्जा करते हुए, लगभग 38.1% पानी की आपूर्ति करता है। हालाँकि, नेपाल और भारत के बीच सीमावर्ती क्षेत्रों में कई मुद्दे हैं, मुख्य रूप से बाढ़ और बाढ़ के बारे में, जो ज्यादातर हर साल मानसून के मौसम में सतह पर आते हैं। नेपाल भारत पर अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांतों के विपरीत, नेपाली क्षेत्र में बाढ़ लाने, अंतर्राष्ट्रीय सीमा के निकट बैराज, सड़कें और तटबंध बनाने का आरोप लगाता है, जो नदियों के प्राकृतिक प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इसी तरह, भारतीय राज्य कभी–कभी अपने क्षेत्र में बाढ़ के लिए नेपाल को दोषी ठहराते हैं। इसी तरह, सिंचाई के मुद्दे अक्सर नेपाली पक्ष द्वारा उठाए जाते हैं, खासकर समझौतों के माध्यम से बनाए गए बैराज से संबंधित मुद्दे। हालाँकि, यह शोध मुख्य रूप से संधियों/समझौतों के माध्यम से दोनों देशों द्वारा साझा किए गए लाभों और उनके कार्यान्वयन में विवादों की समीक्षा पर केन्द्रित है, ताकि यह विश्लेषण किया जा सके कि क्या ये समझौते आपसी हित या भारतीय आधिपत्य का परिणाम हैं।

20वीं सदी की शुरुआत से, नेपाल और भारत ने सीमा पार जल के उपयोग और नियंत्रण के लिए कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। हालांकि, इन सभी समझौतों/संधियों में अपने लाभ सुरक्षित करने में असमर्थ होने के कारण, और भारत की अर्थव्यवस्था और दोहन क्षमता में श्रेष्ठ होने के कारण, सीमा पार

Ravindra Kulhalkar
15/4/2024

Krishna Kumar Sah
18/04/24.

सभी समझौतों/संधियों में अपने लाभ सुरक्षित करने में असमर्थ होने के कारण, और भारत की अर्थव्यवस्था और दोहन क्षमता में श्रेष्ठ होने के कारण, सीमा पार नदियों पर नियंत्रण पाने के लिए, नेपाल की देश के भीतर आलोचना की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप दोनों तटवर्ती देशों के बीच जल संसाधनों के बंटवारे को लेकर असंतोष बना हुआ है। इसलिए, नेपाल और भारत के बीच द्विपक्षीय बैठकों के एजेंडे में जल संसाधनों के मुद्दे को हमेशा प्रमुखता मिली है। हालाँकि, भारतीय पक्ष का दावा है कि नेपाल में पानी के मुद्दों का अत्यधिक राजनीतिकरण इन समझौतों से लाभ प्राप्त नहीं होने का कारण है।

शोध प्रश्नः—

- क्या जल विवादों के समाधान से बाढ़ जैसे गंभीर समस्याओं से मुक्ति मिलेगी?
- क्या परियोजनाओं के लागू होने से दोनों देशों को पर्याप्त लाभ मिलेगा?
- क्या नेपाल की आंतरिक राजनीति दोनों देशों के संबंध में समस्या उत्पन्न करती है?
- क्या नेपाल में चीन का राजनीतिक प्रभाव भारतीय हितो को नुकसान पहुंचा रही है?
- क्या दोनों देश जल विद्युत क्षमता का अभीष्ट दोहन कर दक्षिण एशिया का संपन्न देश बन सकता है?
- क्या दोनों देशों के बीच सीमा विवाद का हल आपसी बातचीत है?

सुगौली संधि—1816

4 मार्च 1816 को ईस्ट इंडिया कंपनी की तत्कालीन सरकार और नेपाल के बीच हुई सीमा संधि को सुगौली संधि के नाम से जाना जाता है। इस संधि में नेपाल की ओर से राज गुरू गजराज मिश्र (सहायक चन्द्रशेखर उपाध्यय) तथा कंपनी की ओर से पेरिस ब्रेडशॉ हस्ताक्षर किये थे। इस संधि का परिणाम यह हुआ कि

- नेपाल को पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में लगभग एक—तिहाई क्षेत्र खोना पड़ा।

Ramesh Kumar ... 15/4/2024

Krishna Kumar ... 13/04/24

- ब्रिटिश भारत को एक बड़ा क्षेत्रीय लाभ प्राप्त हुआ। अंग्रेजों को पूर्व और पश्चिम में गलियारे को सुविधा तो मिली ही, सारी सुविधाएँ और लाभ भी मिले।
- नेपाल के लिए कोई सुविधा एवं रियाश्त का प्रावधान नहीं किया गया।
- इस संधि में राष्ट्रीय परिसीमन को स्पष्ट नहीं किया गया।

  इस वजह से कई स्थानों पर सीमा निर्धारण और सीमा स्तंभो की स्थापना को लेकर विवाद है। विवादित क्षेत्र का क्षेत्रफल लगभग 60000 हेक्टेयर भूमि है अर्थात 54 स्थानों पर अतिक्रमण और विवादों के आरोप है। जिसमें प्रमुख क्षेत्रः– कालापानी लिम्पियाधुरा, सुस्ता, मेची, क्षेत्र, टनकपुर, सकन्दपुर पशुपतिनगर हिले थोरी एवं अन्य स्थान है।

कालापानी विवाद–1997–2020:

भारत व नेपाल के मध्य हालिया विवाद का कारण उत्तराखंड के धारचूला को लिपुलेख दर्रे से जोड़ती एक सड़क है। नेपाल का दावा है कि कालापानी के पास पड़ने वाला यह क्षेत्र नेपाल का हिस्सा है और भारत ने नेपाल से वार्ता किये बिना इस क्षेत्र में सड़क निर्माण का कार्य किया है। नेपाल द्वारा आधिकारिक रूप से नेपाल का नवीन मानचित्र ज़ारी किया गया, जो उत्तराखण्ड के कालापानी, लिंपियाधुरा और लिपुलेख को अपने संप्रभु क्षेत्र का हिस्सा मानता है। नवंबर, 2019 को भारत ने एक नवीन मानचित्र प्रकाशित किया था जो जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख को केन्द्र शासित प्रदेश के रूप में दर्शाया है। इसी मानचित्र में कालापानी को भी भारतीय क्षेत्र के रूप में दर्शाया गया है इस मानचित्र ने भारत–नेपाल के बीच पुराने विवादों में नई जान डाल दी।

भारत–नेपाल शांति और मित्रता संधि–1950 :

यह भारत और नेपाल के मध्य द्विपक्षीय संधि है जिसका उद्देश्य दोनों दक्षिण एशियाई पड़ोसी देशों के बीच घनिष्ठ रणनीतिक संबंध स्थापित करना है। यह संधि दोनों देशों के बीच लोगों और वस्तुओं की मुक्त आवाजाही और रक्षा एवं विदेशी मामलों के बीच घनिष्ठ संबंध तथा सहयोग की अनुमति देती है। साथ ही यह संधि नेपाल को भारत में हथियार खरीदने की सुविधा भी देती है।

15.4.2021

Krishna Kumar Sah
13/04/21

नेपाल अब इस संधि के प्रावधनों को मानने को बाध्य नहीं है क्योंकि 2020 में चीन के रक्षामंत्री वेई फेंगही एक दिवसीय नेपाल यात्रा के दौरान दोनो देशों में हथियार खरीद और मिलिट्री ट्रेनिंग से जुड़े अहम समझौते पर हस्ताक्षर किये। जो भारत के लिए एक चिंता का विषय है।

नेपाल–भारत जल संबंध :

भारत नेपाल जल संबंध में पहला आधिकरिक पत्राचार 1874 के प्रधानमंत्री जंग बहादुर राणा के समय में ब्रिटिश भारत द्वारा नेपाल सरकार (जीओएन) को संबोधित एक पत्र माना जा सकता है। इसके बाद दोनों देशों ने कई समझौतों/संधियों में प्रवेश किया है, जिसकी शुरुआत 1920 में हुई थी जब महाकाली नदी में सारदा बैराज के निर्माण के लिए पत्रों का आदान–प्रदान किया गया था। इसी प्रकार, 1954 में कौसी समझौता, 1959 में गंडक समझौता, 1991 में टनकपुर समझौता ज्ञापन और 1996 में महाकाली संधि पर विभिन्न राजनीतिक संदर्भो में कई मीठे और कड़वे अनुभवों के साथ हस्ताक्षर किए गए।

कोसी समझौता –1954

1954 में कोसी में बैराज बनाने के लिए भारत और नेपाल के बीच हस्ताक्षर किये गये थे। जिसका मुख्य उद्देश्य बिहार में भारी बाढ़ और तबाही को नियंत्रित करना था। लेकिन बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए किसी भंडारण क्षमता वाली डायवर्जन संरचना का प्रस्ताव देखना अपरंपरागत है। यह समझौता कोसी बैराज से सिंचित होने वाले कुल क्षेत्रफल (भारत और नेपाल दोनों में) के बारे में कुछ नहीं बताता है और न ही इससे उत्पन्न होने वाली जलविद्युत की मात्रा के बारे में कुछ कहता है।

परियोजना क्षेत्र के पट्टे, अंतरबेसीन डायवर्जन, पानी और बिजली का उपयोग, नौवहन अधिकार, मछली पकड़ने का अधिकार आदि से संबंधित प्रावधानो को 1996 में समझौते में संशोधन द्वारा संबोधित किया गया था। 1970 से, नेपाल में सिंचाई के लिए सुनसारी–मोरंग सिंचाई परियोजना चालू है, लेकिन सिंचाई आपूर्ति असंतोषजनक बनी हुई है। इसी प्रकार, बैराज के निर्माण से विस्थापित लोग उचित वित्तीय मुआवजे से वंचित हैं, जिसे भारत समझौते के अनुसार भुगतान

Ram ... Kr. Thakur
15/4/2024

Krishna Kumar Sahu
15/04/24

करने के लिए बाध्य था। जो भारत और नेपाल के रिश्तों में कड़वाहट को बनाये रखा है।

गंडक समझौता–1959 :

सिंचाई के प्रयोजनों और जलविद्युत ऊर्जा के निर्माण के लिए भैसलोटन (बाल्मीकिनगर) में गंडक नदी पर बैराज बनाने के लिए 1959 में भारत और नेपाल के बीच समझौता हुआ। इस समझौते में परियोजना से नेपाल को प्रदान की जाने वाली सिंचाई सुविधाओं का विस्तृत विवरण और बिजली की आपूर्ति के लिए मुख्य पश्चिमी नहर पर नेपाली क्षेत्र में 15,000 किलोवाट की स्थापित क्षमता वाले बिजलीघर का निर्माण शामिल है। दोनों देशों को, हालाँकि, समझौते में इस परियोजना से भारत को मिलने वाले सिंचाई लाभ के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया है। सिंचाई के पानी की कम उपलब्धता, अनैच्छिक रूप से विस्थापित लोगों के कारण गंडक परियोजना के लाभ अनुमान से बहुत कम हैं। अभी तक मुआवजा नहीं दिया गया है, जिससे रेत जमाव और तट कटाव बढ़ रहा है। गंडक बैराज में सिल लेवल बनाए रखने का किया गया वादा पूरा नहीं किया गया और नेपाल को बैराज से कभी भी निर्धारित मात्रा में पानी नहीं मिला।

महाकाली संधि–1996 :

1996 में नेपाल और भारत के बीच महाकाली संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे, और इसमें सारदा बैराज, टनकपुर बैराज और पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना शामिल थी। यह समझौता 5 जून 1997 से 75 वर्ष की अवधि के लिए लागू हुआ, जिसमें हर दस साल के बाद समीक्षा का प्रावधान था।

सारदा समझौता–1996 :

भारत और नेपाल के कुछ हिस्सों में सिंचाई के लिए बनबसा में महाकाली नदी पर एक बैराज बनाने के लिए 1920 में नेपाल और ब्रिटिश भारत के बीच पत्रों का आदान–प्रदान किया गया। पत्रों के अनुसार, नेपाल को सिंचाई के लिए 15 मई से 15 अक्टूबर तक गर्मी के मौसम के दौरान बैराज से 1000 क्यूसेक पानी और सर्दियों के मौसम के दौरान 150 क्यूसेक पानी मिलना था। हालाँकि, नेपाल अपने

Ravindra K. Thakur
15/4/2024

Krishna Kumar Sah.
15.04.24.

हिस्से के पानी का पूरा उपयोग तभी कर पाया जब विश्व बैंक की सहायता से निर्मित, 1971 में शुरू हुई। महाकाली सिंचाई परियोजना 1997/98 (पुनः 2006) में पूरी हुई।

टनकपुर बैराज–1988 :

टनकपुर बैराज का निर्माण 1988 में शुरू किया गया था। महाकाली पर, पुराने 1920 के सारदा बैराज के 'विकल्प' के रूप में, भारत में 1.61 मिलियन हेक्टेयर भूमि की सिंचाई और बिजली उत्पादन के लिए किया गया था। 6 दिसम्बर 1991 को नेपाल और भारत के बीच 'समझौता ज्ञापन' के रूप में एक विवादास्पद समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिसकी नेपाल में विरोधियों द्वारा भारी आलोचना की गई थी और बाद में, नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय ने इसे 'संधि' घोषित किया था तथा इसे महाकाली संधि में शामिल किया गया और इसे पंचेश्वर की उच्च बांध भंडारण परियोजना से जोड़ा गया। महाकाली संधि में यह प्रावधान है कि यदि सारदा बैराज निष्क्रिय हो जाता है तो टनकपुर बैराज से पानी कि आपूर्ति कि जाएगी।

उत्तराखंड में टनकपुर से लगे नेपाल क्षेत्र ब्रह्मदेव के पास भारत नेपाल सीमा पर पिलर नदारद होने के बाद भी दोनो देशों के बीच वर्षो से सीमा विवाद चाल रहा है। लोगों ने नो–मेन्स लैंण्ड पर कब्जा जमा लिया है।

पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना–1996

12 फरवरी 1996 को भारत और नेपाल सरकार के बीच पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना (पीएमपी) हस्ताक्षर किये गये थे। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत और नेपाल में उर्जा उत्पादन और सिंचाई को बढ़ावा देना है। पंचेश्वर एक ऐसा बांध था जिसे भारत दो दशकों से अधिक समय से चाहता था लेकिन नेपाल ने इसके लिए ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई थी।

अब संधि लागू है और कार्यान्वयन की प्रक्रिया में है। हालाँकि, कार्यान्वयन प्रक्रिया बहुत धीमी रही है और प्रगति होने के कोई संकेत नहीं हैं। विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर), जिसे छह महीने में तैयार किया जाना था, कुछ अनसुलझे मुद्दों के कारण दो दशक से अधिक समय के बाद भी अंतिम रूप नहीं

Krishna Kumar Sah
15.04.24

दिया गया है। महाकाली संधि के कार्यान्वयन में इस देरी ने नेपाल–भारत जल सहयोग में गतिरोध पैदा कर दिया है।

नेपाल पर चीन का बढ़ता प्रभाव :

चीन के फाईव फिंगर्स नीति(1954) उसके पुर्व नेता माओ जेडोंग द्वारा परिकल्पित एक विदेश नीति है। उनका मानना था की तिब्बत चीन का दाहिना हाथ है जबकी, सिक्किम, अरूणाचलप्रदेश, भुटान, नेपाल और लद्दाख उसकी परिधि की 'पाँच उंगलियाँ' है और इन क्षेत्रों को मुक्त कराना चीन का कर्त्तव्य है। इसके बाद से चीन का प्रभाव दक्षिण एशिया में लगातार बढ़ रहा है। नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान या बांग्लादेश हर जगह चीन की मौजूदगी बढ़ी है। ये सभी देश चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव परियोजना में शामिल हो गए हैं लेकिन भारत इस परियोजना के पक्ष में नहीं है। नेपाल में चीन के बढ़ते दखल के बाद पिछले कुछ समय से भारत–नेपाल के बीच संबंधों में पहले जैसी गर्मजोशी देखने को नहीं मिल रही। चीन ने इसका पूरा–पूरा लाभ उठाते हुए नेपाल में अपनी स्थिति को और मजबूत किया है। साथ ही वेस्ट सेटी हाईड्रो पावर प्रोजेक्ट में चीन का निवेश करना, नेपाल चीन के बीच हथियार खरीद और मिलिट्री ट्रेनिंग से जुड़े अहम समझौते पर हस्ताक्षर करना। भारत – नेपाल के अच्छे संबंध में संकट उत्पन्न कर रही है।

बिगड़ते रिश्ते में भारत की भूमिका :

दोनों देशों के संबंधों में कड़वाहट तब आई जब सितंबर, 2015 में नेपाली संविधान अस्तित्व में आया। लेकिन, भारत द्वारा नेपाली संविधान का उस रूप में स्वागत नहीं किया गया जिस रूप में नेपाल को आशा थी। भारत का रुख मधेसियों को नेपाल में नागरिकता का अधिकार दिलाना था। इनमें लाखों मधेसियों ने वर्ष 2015 में नागरिकता को लेकर व्यापक आंदोलन चलाया था। नेपाल सरकार का ऐसा आरोप है कि मधेसियों के समर्थन में भारत सरकार ने उस समय नेपाल की आर्थिक घेराबंदी की थी।

नेपाल वर्ष 2017 में चीन की वन बेल्ट, वन रोड परियोजना में शामिल हुआ, परंतु भारत नेपाल पर इस परियोजना में शामिल न होने का दबाव डाल रहा

Ravindra Kr. Jhelum
15/4/2024

Krishna Kumar Sah
15.04/24.

था। भारत द्वारा इस प्रकार दबाव डालना नेपाल को रास नहीं आया और इस घटना ने भारत की 'बिग ब्रदर' वाली छवि को स्थापित किया।

नवम्बर, 2019 को भारत ने एक नवीन मानचित्र प्रकाशित किया था जो जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख को केन्द्र शासित प्रदेश के रूप में दर्शाया है। इसी मानचित्र में कालापानी को भी भारतीय क्षेत्र के रूप में दर्शाया गया है इस मानचित्र ने भारत–नेपाल के बीच पुराने विवादों में नई जान डाल दी।

शोध का आच्छादन : सार तत्व एवं क्षेत्र

भारत–नेपाल संबंध के परिदृश्य में विशेष रूप से जल प्रबंधन पर चर्चा इस शोध का अध्ययन क्षेत्र होगा। इस शोध कार्य दोनों देशों के बीच जल बंटवारे की आपसी विवादों को सुलझाना तथा बाढ़ नियंत्रण और सिंचाई की समुचित व्यवस्था एवं जल विद्युत सहयोग की क्षमता का लाभ प्राप्त करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जो अलग–अलग मान्यताओं के कारण बहुत अधिक अछूता रहा। साथ ही इस शोध कार्य द्वारा वर्त्तमान समय में भारत–नेपाल के जल प्रबंध के फायदेमंद अवसरों का भी विश्लेषण किया जाएगा।

साहित्य का पुनर्रावलोकन :

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु पूर्व अध्ययन की बहुलता है। भारत–नेपाल संबंधों का आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा वैदेशिक सन्दर्भ में कई अध्ययन किये जा चुके हैं। जिनमें भारत–नेपाल सम्बन्धों का विभिन्न परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। जिनमें प्रमुख अध्ययन इस प्रकार है–

डॉ. भूपेन्द्र सिंह यादव, "भारत–नेपाल सम्बन्ध समसामयिक अध्ययन" Evincepub Publishing Parijat Extension, Bilaspur, Chhattisgarh, 2022 में भारत–नेपाल संबंधों के राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सैनिक और व्यापारिक संदर्भो का विश्लेषण है तथा भारत–नेपाल संबंधों में उभरते आयाम, चुनौतियों व संभावनाएँ मौजूद है।

डॉ0 हेमेन्त कुमार पांडे एवं अखिलेख द्विवेदी, "India Nepal Relations Under Chinese Influence : An Analytical Perspective", Bluerose Publishers , New Delhi 2021, यह पुस्तक चीन के प्रभाव के साथ भारत –

Rajendra Kothalkar
15/4/2024

Krishna Kumar Sah
13/04/24

नेपाल संबंधों पर केन्द्रित है। चीन की उपस्थिति भारत –नेपाल संबंधों को परेशान कर रही है, नेपाल का झुकाव चीन की ओर अधिक दिखता है जो भारत के लिए चिंताजनक स्थिति है। साथ ही ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिपेक्ष्य और समसामयिक मुद्दों पर भारत– नेपाल संबंधों का मूल्यांकन करती है।

अरूण मिश्र "भारत–नेपाल संबंध के विविध आयाम", उदय पब्लिशिंग हॉउस दिल्ली, 2020, इस पुस्तक में भारत नेपाल के पारंपरिक संबंधों को उकेरने का प्रयास किया गया है । चीन के बहकावे में नेपाल की सत्ता में आना और नेपाल की उस जनता की आवाज को दबाने का प्रयास व भारत तथा नेपाल के संबंधों का चित्रण किया गया।

प्रो0 ए0 पी0 शुक्ल, " भारत नेपाल संबंध : चुनौतियाँ और अवसर" राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2018 में भारत नेपाल के आत्मीय संबंधों को दर्शाया गया है साथ ही सन् 1950 में दोनों पड़ोसियों ने शांति और मित्रता की संधि द्वारा आपसी संबंधों को बतलाया है । आपसी संबंधों को मजबूत बनाने के अवसर को भी दिखाया है।

S.D. Muni, "Foreign policy of Nepal", Adroit Publishers (Revised Edition 2016), इस संशोधित संस्करण में पिछले लगभग 70 वर्षो (1951–2016) के लिए नेपाल के विदेश नीति की ऐतिहासिक जड़ों, उद्देश्य पूर्ण और आलोचनात्मक मुल्यांकन प्रस्तुत करता है।

नायक, Himalayas निहार आर., "Strategic Republican Nepal and External Powers", पेन्टागन प्रेस, नई दिल्ली, 2016 में भारत का नेपाल की आंतरिक राजनीति तथा राजनीति के संस्थाकरण में योगदान का अध्ययन किया है तथा भारत की नेपाल के साथ घनिष्ठ बहुआयामी संलग्नता का समर्थन किया है, साथ ही चीन की नेपाल के प्रति कूटनीतिक व्यूह रचना की आलोचनात्मक व्याख्या भी की है।

जैन, बी.एम., अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013। प्रस्तुत पुस्तक में प्रो. बी.एम. जैन द्वारा भारत के अपने पड़ौसी एवं विभिन्न देशों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के बारे में विस्तृत से चर्चा की गई है। इसके अध्याय 19 'नेपाल में राजनीतिक घटनाक्रम' में नेपाल में 1991 से 2001 तक के एवं 2001 से 2011 तक के राजनीतिक घटनाक्रम वहाँ की लोकतांत्रिक व्यवस्था के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है।

Ravindra Kulhari
15/4/2024

Krishna Kumar Sah
13/04/24.

यादव, आर.एस., "भारत की विदेश नीति", पिएर्सन, नई दिल्ली, 2013 में भारतीय विदेश नीति का बहुपक्षीय तथा सम्पूर्ण विवेचन करते हुए भारतीय विदेश नीति के सभी सान्दर्भिक पक्षों जैसे सांस्कृतिक, राजनीतिक, सांस्थानिक प्रक्रियागत, राजनयिक तथा आर्थिक पक्ष के मद्देनजर क्षेत्रीय सम्बन्ध व सहयोग को वर्गीकृत किया है। लेखक ने भारत–नेपाल सम्बन्धों का विवाद तथा मापदण्डों का परीक्षण किया है।

झा, मुकेश कुमार, भारत–नेपाल सम्बन्ध के आयाम (1816–1950), मिथिला प्रकाशन, दिल्ली, 2012। प्रस्तुत पुस्तक ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) के अन्तर्गत पी–एच.डी. उपाधि हेतु उपस्थापित शोध प्रबन्ध का पुस्तकाकार रूप है। 1916 का वर्ष भारत के इतिहास का घोर पीड़ादायक, त्रासद और मर्मान्तक वर्ष है, जब सुगौली की संधि द्वारा अंग्रेजों ने भारत को दो भागों में विभाजित कर इसके उत्तरी भाग पर नेपाल के प्रभुत्व को स्वीकार किया। विखंडन के इस पीड़ा को आज भी ओर, शायद भविष्य में भी भोगने के लिए भारत अभिशप्त है। लेकिन क्या भौगोलिक विभाजन भारत की ऐतिहासिक अस्मिता को खंडित कर पाया ? औपनिवेशिक काल में भारत–नेपाल संबंधों से भारत का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन किस हद तक प्रभावित हुआ अथवा भारत की विशेष भौगोलिक अवस्थित तथा नेपाल के साथ इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक अन्तःसंबंधों ने किस सीमा तक भारत–नेपाल संबंधों को प्रभावित किया। प्रस्तुत पुस्तक इन सभी प्रश्नों का गवेषणात्मक उत्तर है।

शुक्ल, कृष्णानन्द, भारत–नेपाल संबंध, अंकित पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2011। इस पुस्तक में भारत–नेपाल संबंधों का सासमान्य परिचय तथा भारत, नेपाल और चीन संबंधों के त्रिकोण के बारे में बताया गया है। इस पुस्तक में भूतकाल की घटनाओं, आंकड़ों, प्रश्नोत्तरी, साक्षात्कार तथा समस्या से सम्बन्धित पुस्तकों, लेखों, व्याख्यानों आदि की मदद ली और यह प्रयास किया है कि हम निष्कर्ष तक पहुँच सकें। भारतीय सुरक्षा के संदर्भ में भारत–नेपाल सम्बन्ध के महत्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

सांसम, संध्यारानी देवी, "India-Nepal relations-Historical, Cultural and Political Perspective", विज बुक्स इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड,

Rajendra Kr. Thakur
15/4/2024

Krishna Kumar Sah
13/04/24

नई दिल्ली, 2011 में भारत–नेपाल के मध्य ऐतिहासिक व सांस्कृतिक समीपता का व्यापक अध्ययन किया है। उनके अनुसार व्यापारिक व राजनीतिक सम्बन्ध भी परस्पर सह–सम्बन्ध रखते हैं तथा उसी आधार पर भारत–नेपाल के भविष्यगामी सम्बन्धों की दिशा को रेखांकित करने का सफल प्रयास किया है।

अग्रवाल, एस.एम., अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, आस्था पब्लिकेशन, जयपुर, 2010, पुस्तक में भारत व नेपाल दोनों देशों के मध्य 1860 किलोमीटर की खुली सीमा है, जहाँ लोगों और सामान की खुली आवाजाही है, इसका विस्तृत चर्चा किया गया है। नेपाल में भारतीय रूपये को वैधानिक मान्यता है। नेपाल का 60 प्रतिशत से अधिक सार्वभौम व्यापार भारत में केन्द्रित है तथा देश में लगभग आधा प्रत्यक्ष विदेश निवेश भारत से होता है। भू–आबद्ध राज्य होने के कारण नेपाल का सम्पूर्ण समुद्री व्यापार भारत के बन्दरगाह से होता है। भारत–नेपाल संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए द्विपक्षीय परामर्शी दल गठित किया गया है। फिर भी भारत–नेपाल संबंध अस्थिरता के शिकार है। इन्हें न मधुर कहा जा सकता न कटु।

पुष्पिता, डी.ए.एस.टूवार्डस ए रेगूलेटेड इन्डो–नेपाल बॉर्डर, स्ट्रेटेजिक एनालिसस, 2008।

भारत–नेपाल सीमा एक खुली सीमा है जिसने दोनों देशों के मध्य सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और सामरिक आदान–प्रदान और दोनों देशों के बीच एक खास रिश्ता स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। हालांकि हाल के दिनों में आतंकवादियों, राजनीतिक कार्यकर्ताओं तथा असामाजिक तत्वों द्वारा सीमा के बढ़ते दुरूपयोग के कारण भारत के सीमा को बंद करने की मांग उठाने के लिए प्रेरित किया है। प्रस्तुत लेख के अनुसार एक बंद सीमा दोनों देशों के लिए लाभदायक नहीं हैं, क्योंकि एक बंद सीमा के कारण दोनों देशों के मध्य सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक दूरिया बढ़ जायेगी। अतः प्रस्तुत लेख के अनुसार एक मध्यमार्ग, एक खुली सीमा, जिसे निरन्तर नियमित किया जा सके, को एक नीति के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

चौपड़ा, वी.डी., "इण्डिया फोरेन पॉलिसी" : 21 सेन्चुरी", कल्पाज पब्लिकेशन्स, 2006। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने आलोचनात्मक परीक्षण के माध्यम से भारत द्वारा 21वीं सदी तक जारी नई प्रवृत्तियों, राजनीतिक, आर्थिक संबंधों का दूसरे देशों के साथ जारी रखने की स्थिति का वर्णन

Ramsha Kr Thakur
15/4/2024

Krishna Kumar Sah
13/04/24.

किया है। इसके प्रभाव का विश्व के संदर्भ में जारी दूरगामी परिणाम का उल्लेख किया है। साथ ही भारत अपने आप को सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन कर अद्वितीय स्थिति के साथ विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में प्रदर्शित करने की व्याख्या की है।

पांडे, अंशु, "भारत–नेपाल सबन्ध", सूर्य प्रकाश श्रीवास्तव, 2004, 1977 से 2002 तक के भारत–नेपाल सम्बन्धों का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति ज्ञान में अभिवृद्धि होगी अपितु भारत को दक्षिण एशियाई पड़ोसी देशों के साथ जो वैदेशिक नीतियाँ परम्परागत एवं व्यवहारिक रूप में संचालित हैं, उनको सही रूप में समझने में सहायता प्राप्त होगी।

अग्रवाल, निर्मला, "भारत–नेपाल सम्बन्ध", ए.बी.डी. पब्लिशर्स, 2003 में भारत–नेपाल सम्बन्धों पर अभिनव प्रकाश डालते हुए एक शोधपरक और मौलिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। दुर्लभ ऐतिहासिक दस्तावेजों के गहन विश्लेषण और नेपाल के पूर्व व तत्कालीन प्रधानमंत्रियों, सांसदों व विशिष्ट राजनीतिज्ञों तथा भारत के भी वरिष्ठ राजनीतिज्ञों से अन्तरंग साक्षात्कार पर आधारित होने के कारण पुस्तक अत्यन्त सरस, रोचक और सारगर्भित है।

Articles

दीप्तिमा शुक्ला ने The Indian Journal of Political Science Journal में "INDIA-NEPAL RELATIONS : PROBLEMS AND PROSPECTS" नामक लेख में नेपाल के प्रति भारत की नीति को चित्रित करने का प्रयास करता है। यह भारत–नेपाल संबंधों से संबंधित गतिशीलता, मुद्दों और समस्याओं की पहचान और विश्लेषण करता है। लेख भारत–नेपाल संबंधों को बेहतर बनाने के लिए कुछ सुझाव दिए है।

देब मुखर्जी ने Indian Foreign Affairs नामक Journal में । **"Perspective on Indo-Nepal Relations"** नामक लेख में 01 फरवरी 2005 में नेपाल का शाही तख्तापलट से दोनों देशों के बीच के संबंधों में आने वाली कठोरता की जानकारी देती है।

Ramdhan Kathal
15/4/2024

Kishora Kumar Sah
13/04/24

विनोद खोबरागड़े ने World Affairs नामक Journal में "INDIA-NEPAL RELATIONS : ENGAGEMENT & ESTRANGMENT" नामक लेख में भारत और नेपाल के बीच संबंधों को हाल ही में नुकसान हुआ हैं, मुख्यतः नए संविधान को अपनाने की प्रक्रिया में नेपाल के आंतरिक राजनीतिक संघर्षों के परिणामस्वरूप एक अध्ययन है।

संगिता थपलियाल ने A Journal of International Affairs नामक लेख " water Security or Security of water? a conceptual analysis" प्रस्तुत लेख जल सुरक्षा की अवधारणा को समझने का प्रयास करता है। वह कौन सी सीमा है जिसके पार पानी एक सुरक्षा मुद्दा बनने योग्य हो जाता है? क्या हमारी सुरक्षा संबंधी चिंतायें मांग और आपुर्ति, अन्तर–राज्य या अन्तर राज्य के तटवर्ती अधिकारों या समाधान के स्वामित्व से उत्पन्न परस्पर विरोधी हितों से उत्पन्न होती है का अध्ययन है।

अक्षय सरोहा ने World Affairs नामक Journal में "Changing Dynamics In India&Nepal Relations" नामक लेख में भारत–नेपाल के बीच हाल के वर्षों में, संबंधों में बढ़ते तनाव ने दक्षिण एशियाई क्षेत्र में भारत की कूटनीतिक गणनाओं को बिगाड़ दिया है। सीमा विवादों का संज्ञान लेते हुए, लेख दो देशों के बीच संबंधों में अन्य दरारों की पड़ताल करता है। तथा भारत–नेपाल संबंधों का ऐतिहासिक और समसामयिक दृष्टि से मूल्यांकन किया जाता है।

लोक राज बराल ने Asian survey नामक Journal में "India&Nepal Relations: Continuity and Change" नामक लेख में नेपाल के 1990 के घटनाक्रम में हुए जनविद्रोह, 30 साल पुराना दलविहीन शासन का ढह जाना, देश के इतिहास में पहली बार, लोकप्रिय संप्रभुता के सिद्धांत और व्यवहार को एक संविधान की उद्घोषणा के माध्यम से स्वीकारणा आदि जानकारी मिलती है।

शोध का उद्देश्य :

भारत नेपाल के बीच जल प्रबंधन का अध्ययन एक रूचिकर विषय है। भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सम्बन्धों

Ravindra Kumar Khelkar
15/4/2024

Krishna Kumar Sahu
15/04/24.

की घनिष्ठता के कारण दोनों सम्प्रभु देश परस्पर जुड़े हुए हैं। अतः इस शोध का उद्देश्य जल विद्युत सहयोग की क्षमता का लाभ प्राप्त करने के साथ ही सिंचाई व्यवस्था को बेहतर बनाने तथा प्रत्येक वर्ष नेपाल की नदियों द्वारा भारत में आने वाली बाढ़ पर निजात पाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा जो एक चिंता का विषय है।

इस प्रस्तावित शोध के निम्न उद्देश्य होंगे –

- कालापानी समस्या को रेखांकित कर भारत और नेपाल के अच्छे संबंधों के अव्यवों की तलाश करना।
- जल संसाधन, ऊर्जा और व्यापार में सहयोग द्वारा द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करना।
- सिंचाई परियोजना तथा जल विद्युत की व्यापक संभावनाओं को आवश्यक पहलुओं कि तलाश करना।
- अन्तर्देशीय जलमार्ग की विकास द्वारा भारत और नेपाल के आर्थिक संबंधों को मजबूत करना।
- जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन और क्षेत्रीय सुरक्षा जैसी गंम्भीर चुनौतियों का संयुक्त रूप से समाधान तलाश करना।

शोध परिकल्पनाएं :

प्रस्तुत शोध कार्य को सुगमतापूर्वक संपादित करने हेतु निम्नांकित परिकल्पनाओं का सत्यापन किया जाएगा :

- भारत और नेपाल के बीच द्विपक्षीय समझौतों के माध्यम से सहयोग बढ़ने से प्रभावी जल प्रबंधन रणनीतियां बनती है।
- भारत और नेपाल के बीच जल संसाधनों पर विवाद द्विपक्षीय संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव डालते है।
- भारत और नेपाल के बीच संयुक्त जल विद्युत विकास परियोजनायें दोनों देशों की आर्थिक वृद्धि में सकारात्मक योगदान देती है।
- भारत और नेपाल के बीच जल प्रबंधन दोनों देशों की आंतरिक विकास को समृद्ध बनाती है।

Ramchandra Kr. Thakur
15/4/2024

Krishna Kumar Sah
13/04/24.

प्रस्तुत शोध कार्य का अनुशान एवं अन्य अनुशासन के लिए योगदान

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य दोनों देशों के बीच आपसी विवादों के उत्पति के कारकों को रेखांकित करना है जो दोनों देशों के बीच के संबंधों को प्रभावित करता है साथ ही शांति और सुरक्षा के लिए खतरा तथा विकास के मार्ग में बाधाएं डाल रही है। इसके अध्ययन से यह पता चलेगा कि दोनों देशों के बीच का संबंध कैसे सुधारा जाय। यह शोध अंतर्राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति क्षेत्रीय राष्ट्रों के बीच का आपसी संबंध में घनिष्ठता लाने और एक – दूसरे राष्ट्र के प्रति आत्मविश्वास को कायम करने में योगदान देगा।

पद्धति उपागम

प्रस्तुत शोध कार्य को संपादित करने के लिए ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक पद्धति का सहारा लिया जाएगा। साथ ही साथ विवरणात्मक शैली में शोध–प्रबंध तैयार करने का प्रस्ताव है। इसके अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय राजनीति परिवेश में भारत, नेपाल तथा चीन से संबंधित सरकारी दस्तावेजों, पुस्तकों, प्रकाशनों, अभिलेखों, प्रमुख समाचार–पत्रों तथा अन्य सामग्री अध्ययन, अवलोकन तथा विश्लेषण कर शोध कार्य पूरी की जाएगी।

कार्य योजना :

प्रस्तुत शोध कार्य को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त कर अध्ययन किया जाएगा–

प्रथम अध्याय – भूमिका

द्वितीय अध्याय– भारत–नेपाल संबंध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

तृतीय अध्याय – भारत में जल प्रबंधन की रणनीतियाँ

चतुर्थ अध्याय – भारत–नेपाल के बीच जल प्रबंधन की उभरती चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

पंचम अध्याय – निष्कर्ष

Krishna Kumar Sah
13/04/24

15/4/2024

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

प्राथमिक स्रोत

Ministry of External Affairs India

https://mea.gov.in

Ministry of Foreign Affairs Nepal

https://mofa.gov.np

Embassy of India, Kathmandu, Nepal

https://www.indembkathmandu.gov.in

Trade and Commerce- New Delhi, India - Embassy of Nepal

https://in.nepalembassy.gov.np

Ministry of Jal Shakti

https://jalshakti-dowr.gov.in

Press Information Bureau Government of India Ministry of External Affairs

https://pib.gov.in

Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses

https://idsa.in

द्वितीयक स्रोत

डॉ0 भूपेन्द्र सिंह यादव, "भारत नेपाल सम्बन्ध समसामयिक अध्ययन" इवीन सी पब्लिशिंग पराजिता एक्सटेंशन, विलासपुर, छतीसगढ़, 2022

नायक, हिमालियाज, निहार आर, "स्ट्रेटेजिक रिपब्लिक नेपाल और एक्सटर्नल पावर्स," पेन्टागन प्रेस, नई दिल्ली।

जैन, बी0 एम0, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013

यादव, आर0 एस0 , " भारत की विदेश नीति", पिएर्सन, नई दिल्ली, 2013

झा, मुकेश कुमार, भारत–नेपाल सम्बन्ध के आयामा(1816–1950), मिथिला प्रकाशन, दिल्ली, 2012

शुक्ल, कृष्णानन्द, भारत–नेपाल संबंध, अंकित पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2011

Ravindra Kr. Thakur
15/4/2024

Krishna Kumar sah
13/04/24.

सांसम, सध्यांरानी देवी '' इण्डिया नेपाल रिलेशन हिस्टॉरिकल, कल्चर एण्ड पॉलिअिकल पर्सपेक्टिव,'' विज बुक्स इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2011

अग्रवाल, एस0 एम0, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, आस्था पब्लिकेशन, जयपुर, 2010

पुष्पिता, डी.ए.एस, टूवार्डस ए रेगूलेटेड इन्डो–नेपाल बॉर्डर, स्ट्रेटेजिक एनालिसस, 2008

चौपड़ा, वी.डी., ''इण्डिया फोरेन पॉलिसी : 21 सेन्चुरी'', कल्पाज पब्लिकेशन्स, 2006

अग्रवाल, निर्मला, ''भारत–नेपाल सम्बन्ध'' , ए.बी.डी पब्लिशर्स, 2003

द्विवेदी, अशोक कुमार, भारत–चीन संबंधों की गति–चुनौतियां एवं अवसर राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2012

रावत, पी.सी. इण्डो–नेपाल इकोनोमिक रिलेशन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, न्यू देहली, 1974

कुमार डी.पी. नेपालः इयर ऑफ डिसिजन, विकास पब्लिशिंग हाउस, देहली, 1980

मुनी एस.डी. फॉरेन पॉलिसी ऑफ नेपाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, देहली, 1973

डॉ. भूपेन्द्र सिंह यादव, ''भारत–नेपाल सम्बन्ध समसामयिक अध्ययन'', Evincepub Publishing Parijat Extension, Bilaspur, Chhattisgarh, 2022

प्रो0 ए0 पी0 शुक्ल, '' भारत नेपाल संबंध : चुनौतियाँ और अवसर'' राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2018

अरूण मिश्र '' भारत–नेपाल संबंध के विविध आयाम'', उदय पब्लिशिंग हॉउस दिल्ली, 2020

एस.डी. मुनी "Dabbling in Diplomacy: Authorised & Otherwise, Recollections of a Non-Career Diplomat", Konark Publishers 2024

संगिता थपलियाल, "Mutual security: Case of India, Nepal", Lancer Publishers 1998

Article

दीप्तिमा शुक्ला ''INDIA-NEPAL RELATIONS PROBLEMS AND PROSPECTS", Indian Journal of Political Science"

देब मुखर्जी ''APerspective on Indo-Nepal Relations", Indian Foreign Affairs

विनोद खोबरागड़े "INDIA-NEPAL RELATIONS: ENGAGEMENT AND ESTRANGEMENT", World Affairs

अक्षय सरोहा "Changing Dynamics In India-Nepal Relations", World Affairs

Ravindra Kr. Thakur
15/4/2024

Kishore Kumar Sah
13/04/24

लोक राज बराल "India-Nepal Relations: Continuity and Change", Asian Survey

संगिता थपलियाल " water Security or Security of water? a conceptual analysis" A Journal of International Affairs

समाचार–पत्र

- द टाइम्स ऑफ इण्डिया, न्यू देहली, 8–9 मई, 1993
- इण्डिया टुडे, न्यू देहली, 16 अक्टूबर, 2002
- द टाइम्स ऑफ इण्डिया, न्यू देहली, 5 जून, 2001
- द हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली, 7 जून, 2001
- द हिन्दुस्तान टाइम्स नई दिल्ली, 7 जून, 2001 इण्डिया टुडे, न्यू देहली, 16 अक्टूबर, 2002
- अमर उजाला, आगरा, 4–5 जनवरी, 2002
- दैनिक जागरण, आगरा, 23 अगस्त, 2002
- द इडियन ऐक्सप्रेस, 23 मई 2020
- **द हिन्दू, 09 जनवरी 2023**
- **ईस्ट एशिया फोरम, 31 जुलाई 2023**

20.04.24

University Department of Political Science
Lalit Naray Mithila University, Darbhanga

Ravindra Kr. Thakur
15/4/2024

Krishna Kumar Sah
13/04/24

पर्यवेक्षक

शोधकर्ता

डॉ. रवीन्द्र कुमार ठाकुर
एसो. प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग
एल.एन.जे. कॉलेज, झंझारपुर

M B Varma
20.04.2024

कृष्ण कुमार साह
क्रमांक– 22160085

20.4.24

20/4/24

20/04/2024